International Journal of Financial Management and Economics 2022; 5(1): 28-31

International Journal of Financial Management and Economics

P-ISSN: 2617-9210
E-ISSN: 2617-9229
IJFME 2022; 5(1): 28-31
Received: 15-11-2021
Accepted: 23-12-2021

Manisha
Assistant Professor, Place of Posting, Govt. College for Girls, Sector-14, Gurugram, Haryana, India

भारतीय बाजार व्यवस्था में लघु, सूक्ष्म एवं मध्यम उद्योगों (Micro, Small & Medium Enterprises) पर COVID-19 के प्रभाव का आंकलन

Manisha

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य COVID-19 महामारी द्वारा प्रभावित भारतीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग इकाइयों पर पड़ने वाले प्रभावों का आंकलन करना है। इसे समझने हेतु इन उद्योग इकाइयों की उत्पादन क्षमता तथा इन MSMe मे कार्य करने वाले श्रमिकों की संख्या में आयी भारी गिरावट द्वारा उत्पन्न बेरोजगारी की समस्या का तथ्यात्मक विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन पूर्ण रूप से द्वितीयक स्रोतो द्वारा प्राप्त निष्कर्षो और भारत सरकार के आधिकारिक स्रोतो से प्राप्त ज्ञान पर निर्भर है। अत यह अध्ययन इस बात की समीक्षा करता है कि COVID-19 द्वारा केवल भारतीय अर्थव्यवस्था ही नही बल्कि समस्त विश्व प्रभावित हुआ है ।

मूल शब्द: MSMe, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों, COVID-19, Lockdown, उत्पादन क्षमता।

प्रस्तावना-

COVID-19 महामारी एक वैश्विक समस्या के रूप में उभरी है। सर्वप्रथम कोरोना वायरस (SARS-CoV2) का उद्भव चीनी शहर वुहान से वर्ष 2019 के दिसंबर माह से प्रकाश में आया तथा मार्च 2020 आते आते इस वायरस ने विश्व के लगभग 180 देशों तक अपना प्रसार को सुनिश्चित कर लिया । तत्पश्चात 11 मार्च 2020 को विश्व स्वस्थ्य संगठन WHO द्वारा इसके अनियमित तथा अनियंत्रित प्रसार को देखते हुए इसे एक वैश्विक माहमारी घोषित कर दिया । विश्व के लगभग सभी विकसित तथा विकासशील राष्ट्र इस वैश्विक चुनौती से निपटने हेतु प्रयासरत हैं। भारत में भी COVID-19 के मामलों में हुई वृद्धि ने भारत सरकार द्वारा निश्चित समयंतराल मे ही कोरोना को नियंत्रित करने की दिशा में लॉक डाउन जैसे कड़े कदम उठाये गए । भारत में प्रत्येक विभाग चाहे वो शिक्षा हो, कृषि क्षेत्र, राज्य, अंतरराज्यीय एवं विदेशी आवागमन हो, रेल तंत्र हो, व्यापार व्यवस्था हो या सर्वाधिक रोजगार उपलब्ध कराने वाली सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम इकाइयों हो, इन सभी को COVID-19 ने व्यापक रूप से प्रभावित किया है। कृषि के पश्चात MSMe का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था मे अति महत्वपूर्ण योगदान रहा है अत इस अध्ययन के अंतर्गत COVID-19 द्वारा प्रभावित देश की सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग इकाइयों की वर्तमान स्थिति का अध्ययन किया गया है। भारतीय बाजार तंत्र में लघु, सूक्ष्म तथा मध्यम उद्योगों का विकास भारतीय अर्थव्यवस्था को पिछले 6 दशकों से लाभांवित करता आया है। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग भारतीय सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 30 फीसदी का निर्धारण करता हैं। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग देश में सर्वाधिक रोजगार उपलब्धता को सुनिश्चित करने के अतिरिक्त सुदूर ग्रामीण तथा अति पिछड़े क्षेत्रों के विकास में भी अहम भूमिका निभाते आये हैं।

अध्ययन उद्देश्य-

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारतीय बाजार अर्थव्यवस्था की रीढ़ कही जाने वाली सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम इकाइयों पर COVID-19 महामारी के प्रभाव का आंकलन के उद्देश्य से निम्न बिंदुओं का अध्ययन किया गया है।

1. भारत में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग इकाइयों की संरचना व वर्गीकरण का अध्ययन करना।
2. भारतीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग इकाइयों पर COVID-19 के प्रभाव का विश्लेषण करने हेतु MSMe की उत्पादन क्षमता तथा नौकरियों के अवसरों में आयी गिरावट से संबधित बिंदुओं का अध्ययन करना

Corresponding Author:
Manisha
Assistant Professor, Place of Posting: Govt. College for Girls, Sector-14, Gurugram, Haryana, India

अध्ययन प्रविधि

इस उद्देश्य हेतु पूर्व में की गई शोधों, चर्चित पुस्तको, भारत सरकार की विभिन्न आधिकारिक तथा वार्षिक वित्त रिपोर्ट को आधार मानते हुए द्वितीयक आकड़ो के रूप में प्रयोग कर विश्लेषणात्मक विधि का किया गया है।

भारत में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग : मूल्यांकन

भारत का सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योग क्षेत्र सर्वाधिक रोजगार उपलब्धता के साथ साथ सामाजिक विकास भी का एक विस्तृत क्षेत्र है। हालाँकि इस क्षेत्र में कार्य करने वर्करो की सटीक संख्या का अनुमान नहीं लगाया जा सकता है परंतु वर्ष 2015-16 मे NSSO द्वारा जारी आ आंकड़ो के आधार पर यह ज्ञात होता है कि उपलब्ध आंकड़ो में लगभग 633.88 लाख पंजीकृत सूक्ष्म लघु एवं मध्यम इकाईयां हैं जिनमें लगभग 99.47 प्रतिशत MSMe सूक्ष्म प्रकार की (निवेश =1 करोड़) जिनकी कुल संख्या 633.52 लाख है, लघु (Small Enterprises) प्रकार की इकाइयों की कुल संख्या 3.31 लाख तथा मध्यम इकाईयों (Medium Enterprises) की संख्या 0.05 लाख है जो कि मात्र 0.01% है। जिसे नीचे तालिका 2 मे भी प्रदर्शित किया गया है।

National Sample Survey Organisation (NSSO) के 73 वे संस्करण जिसे वर्ष वित्त वर्ष 2015-16 में जारी किया गया था, की एक सर्वेक्षण के अनुसार MSMe को पुनः परिभाषित किया गया है जिसे निम्न तालिका द्वारा समझा जा सकता है।

तालिका 1: Revised Classification of MSMe for india [1]

उद्यम का प्रकार	नया निवेश (करोड़ में)	वार्षिक कारोबार (करोड़ में)
सूक्ष्म	1 करोड़	5 करोड़
लघु	10 करोड़	50 करोड़
मध्यम	50 करोड़	250 करोड़

तालिका 1 के अंतर्गत वर्णित आंकड़ो के अनुसार सूक्ष्म उद्योग वह उद्योग हैं जिनमे निवेश एक करोड़ रुपए से अधिक नही होता और वार्षिक कारोबार 5 करोड़ से अधिक ना हो। लघु उद्योग- वह उद्योग जिनमे निवेश की सीमा 10 करोड़ से अधिक नही होती तथा वार्षिक कारोबार 50 करोड़ से अधिक नहीं होता। मध्यम उद्योग - वह उद्योग जिनमें निवेश की सीमा 50 करोड़ से अधिक ना हो तथा वार्षिक कारोबार 250 करोड़ से अधिक ना हो।

तालिका 2: भारतीय अर्थव्यवस्था में MSMe का वर्गीकरण [2]

उद्यम का प्रकार	सूक्ष्म उद्यम	लघु उद्यम	मध्यम उद्यम
उद्योगों की संख्या	630.52 लाख	3.31 लाख	0.05 लाख
प्रतिशत	99.47%	0.52%	0.01%

COVID-19 महामारी का सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग इकाइयों पर प्रभाव

कोविड-19 के प्रभाव का अध्ययन करने हेतु उत्पादन इकाइयों की उत्पादन क्षमता मे देखी गयी गिरावट तथा COVID के दौरान देश में नौकरियों की संख्या से संबंधित आंकड़ो मे आयी गिरावट के फलस्वरूप उत्पन्न बेरोजगारी जैसी स्थितियों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है अत इस अध्ययन को आधार प्रदान करने हेतु MSMe की उत्पादन क्षमता तथा बेरोजगारी से संबंधित चिंताजनक आंकड़ो को आधार बनाया गया है। सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योग इकाइयों पर कोविड-19 के प्रभाव का आंकलन शत प्रतिशत सटीक नहीं किया जा सकता है क्योंकि इस संबंध में आंकड़ों की अनुपलब्धता तथा अनेकों ऐसी उद्योग इकाइयों का संचालन भी है जिनका कोई भी आधार सरकारी रिकॉर्ड में उपलब्ध नहीं है अतः इस विषय पर उपलब्ध आंकड़े अपर्याप्तता की स्थिति को प्रदर्शित करते हैं।

तालिका 3: विभिन्न MSMe इकाइयों में मार्च 2019 तथा सितंबर 2019 के मध्य उत्पादन दर का वर्गीकरण [4]

Description of Industry	March 2019	April 2019	May 2019	June 2019	July 2019	August 2019	September 2019
Metal industry	17.1	2.6	20.8	18.1	20.3	11.8	8.4
Coke and petro.	4.7	3.9	-2.1	-7.7	0.7	3.3	-5.3
Chemical products	1.6	2.8	-0.8	-0.4	7.0	-4.5	-1.2
Food products	8.2	11.3	16.2	15.9	22.1	5.5	1.3
Pharmaceuticals	-1.7	4.1	7.6	6.0	3.2	6.4	-2.1
Textiles	15.5	34.8	5.6	4.4	9.5	1.0	-3.9
Motor vehicles	-6.5	-5.0	-6.4	-14.7	-12.7	-11.7	-26.0
Machinery & Equipment	-5.8	-0.9	-0.7	-6.8	-4.9	-22.0	-18.3
Non - Metalic Minerals	8.2	0.2	-0.1	-3.8	6.9	-4.7	-2.3
All Manufacturing	3.8	2.5	4.4	0.3	4.8	-1.7	-4.3

तालिका 4: विभिन्न MSMe इकाइयों में मार्च 2020 तथा सितंबर 2020 के मध्य उत्पादन दर का वर्गीकरण [4]

Description of Industry	March 2020	April 2020	May 2020	June 2020	July 2020	August 2020	September 2020
Metal industry	-19.3	-70.7	-38.2	-19.9	-8.3	1.4	3.7
Coke and Petro.	-1.7	-28.3	-24.5	-13.8	-17.7	-21.4	-10.7
Chemical Products	-21.6	-54.3	-19.3	1.1	-3.3	-0.9	-5.1
Food products	-14.9	-22.3	-17.3	-6.0	-5.0	-2.2	-0.4

Pharmaceuticals	-25.9	-53.8	4.8	18.0	11.4	-1.6	7.0
Textiles	-56.9	-184.9	-126.6	-79.4	-45.4	-40.7	-25.8
Motor vehicles	-48.9	-99.4	-82.5	-49.1	-31.9	-11.7	2.1
Machinery & Euipments	-37.6	-91.3	-61.7	-31.2	-18.2	-8.7	-3.6
Non metalic mirenals	-23.7	-86.6	-27.3	-10.0	-13.5	-12.5	-7.1
All manufacturing	-22.8	-66.6	-37.8	-17.0	-11.9	-7.9	-0.6

तालिका 3 तथा तालिका 4 के आंकड़ो का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि COVID-19 महामारी के प्रभाव को सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों की उत्पादन दर में आयी गिरावट के रूप में देखी जा सकती है। COVID-19 के निरंतर बढ़ते हुए मामलों को शीघ्र नियंत्रण कर सकने की दिशा में विश्व के अनेकों देशों की तर्ज पर भारत में भी lockdown जैसी व्यवस्था के उपजने के कारण उद्योग, धंधो पर इसका सीधा प्रभाव पड़ा है। इस स्थिति को वैश्विक मंदी के रूप में देखा जाने लगा है। भारत एवं विश्व के अधिकतर देशों द्वारा इस भयावह वैश्विक मंदी से अर्थव्यवस्था को पुनः स्थापित करने हेतु बहुतेरे प्रयास किये जा रहे हैं। मार्च 2019 में धातु उद्योगों की औसत उत्पादन दर 14.15% थी, परंतु COVID-19 के बढ़ते मामलों के कारण औसत उत्पादन दर -21.7 (ऋणात्मक) तक गिरावट देखने को मिलती है। इसी क्रम में उत्पाद निर्माता कंपनियों की उत्पादन करने की दर पर भी COVID-19 का ऋणात्मक प्रभाव देखने को मिलता है। मार्च तथा सितंबर 2019 के मध्य उत्पाद निर्माता कंपनियों की औसत उत्पादन दर 9.8 % थी जो कि घटकर अगले वर्ष 2020 मे -23.51 (ऋणात्मक) हो गयी। उत्पादन क्षमता में आयी इस भयावह गिरावट का नकारात्मक प्रभाव इन क्षेत्रों में नौकरी करने वाले कर्मचारियो की आजीविका पर पड़ा है। देश का MSMe सेक्टर लगभग 11.6 करोड़ नागरिकों को रोजगार उपलब्ध कराता है। इसके अतिरिक्त कृषि क्षेत्र के पश्चात सर्वाधिक रोजगार उपलब्ध कराने में सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्योगों का सर्वाधिक योगदान है। परंतु अचानक आयी इस आपात स्थिति ने देश के एक बहुत बड़े वर्ग को सीधा ही प्रभावित किया है। सर्वविदित है कि सर्वाधिक रोजगार उपलब्ध कराने वाला MSMe सेक्टर प्रारंभ से ही अभावो से जूझता रहा है परंतु इन सभी समस्याओं से ग्रस्त होने के बावजूद भारत से निर्यात की जाने वाली लगभग 50% से अधिक उत्पादित वस्तुये इन्ही सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योगों पर निर्भर है।

COVID-19 के कारण MSMe सेक्टर के अंतर्गत आने वाले उद्योगों के कामगारो के समक्ष उत्पन्न नौकरी की समस्या ने देश में बेरोगजारी दर को बढ़ा दिया है जिसे निम्न आंकड़ो के द्वारा समझा जा सकता है।

सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनोमी (Center for Monitoring Indian Economy) की बेरोगजारी पर आये एक रिपोर्ट बताती है कि सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों की उत्पादन करने वाली इकाइयों के अंतर्गत वर्ष 2019-20 मे लगभग 40 मिलियन जॉब्स उपलब्ध थे परंतु वर्ष 2020-21 की पहली तिमाही में यह घटकर 24.6 मिलियन ही रह गए अर्थात् सीधे तौर पर 13.4 मिलियन नौकरियां चली गयी। हालांकि दूसरी और तीसरी तिमाही दिसंबर तक क्रमशः 27.1 मिलियन एवं 28.8 मिलियन हो गयी। इस प्रकार अप्रैल -मई 2020 के दौरान देश में बेरोजगारी दर 20% से भी अधिक हो गयी है जो कि पिछले वर्ष की तुलना में लगभग दुगुनी है।

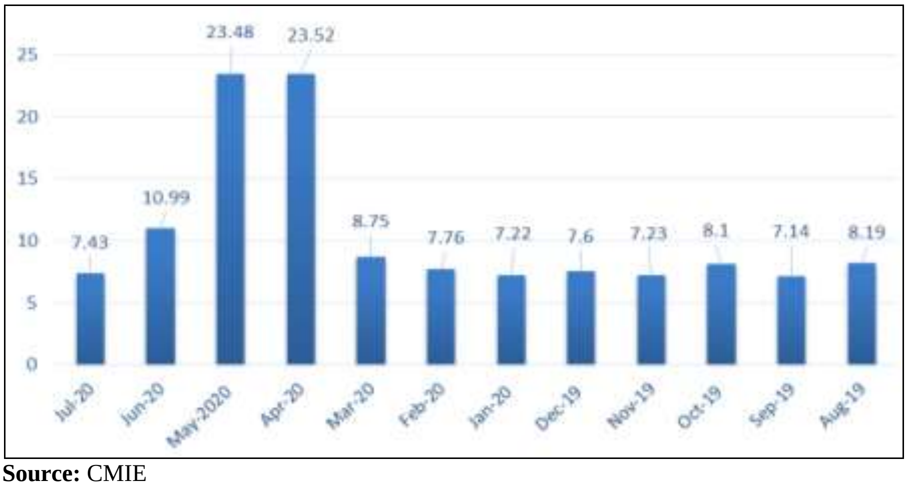

Source: CMIE

Fig 1: Unemployment rate in India during COVID-19 period

ग्राफ में वर्णित आंकडे से समझा जा सकता है कि अगस्त 2019 मे बेरोगजारी दर 8.19 थी परंतु उद्योग धंधो के लगातार बन्द रहने के फलस्वरूप बहुतेरे उद्योगों में कार्यरत श्रमिको की नौकरी चली गयी या फिर उन्हे निकाल दिया गया आदि कारणो से बेरोजगारी दर में उछाल देखने को मिलता है। अगले वर्ष यानि 2020 जुलाई माह के अंतराल में यह दर बढ़कर लगभग दुगुनी हो जाती है। ग्राफ की यह स्थिति भारतीय नीति निर्माताओं तथा MSMe मे कार्यरत श्रमिको हेतु अत्यन्त ही चिंताजनक है।

Swayam *et al.* (2020) द्वारा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों पर COVID-19 के प्रभाव का आंकलन करने के उद्देश्य से शोध कार्य किया गया जिस हेतु बालासोर (ओडिशा) को 100 MSMe कंपनियों का चयन किया गया। इनमें 6 मध्यम प्रकार, 17 लघु प्रकार की तथा 77 सूक्ष्म प्रकार की कंपनियों का चयन किया गया। COVID-19 के दुष्प्रभाव को समझने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नोतरी का प्रयोग कर आंकड़ो का संग्रहण किया गया । प्राप्त आंकड़ो के आधार पर यह सिद्ध हुआ कि इन उद्योगों में काम करने वाले वर्कर्स की संख्या में आई कमी ने एवं उत्पादों की मांग में आयी भारी गिरावट ने MSMe क्षेत्र को भारी क्षति पहुचाई है। [5]

स्टैंडिंग कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार MSMe पर COVID-19 का प्रभाव का -27 मई 2021 को डॉ केशवा राय की अध्यक्षता में

निर्मित उद्योग संबंधी स्टैंडिंग कमेटी की रिपोर्ट इस बात की पुष्टि करती है कि COVID-19 मे Contentment Zones बनाने तथा लॉक डाउन लगाने जैसी आपातकालीन स्थितियों के परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में नौकरियां चली गयी साथ ही परिवारों की नियमित आय में भी अत्यधिक गिरावट देखने को मिली है। [3]

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय भारत सरकार की एक रिपोर्ट बताती है कि COVID-19 के दौरान ट्रांसपोर्ट जैसी सेवाओं के अस्थायी रूप से निष्क्रिय पड़े रहने के परिणामस्वरूप अप्रैल तथा जुलाई 2020 के मध्य पेट्रोलियम उत्पादों की माँग मे गत वर्ष 2019 की तुलना मे 22.5% की भारी गिरावट देखी गयी है। [6]

Rathore *et al*. 2020 द्वारा "COVID-19 Crisis and Health of Small Business" नामक शोध में लघु उद्योग इकाइयों पर COVID-19 महामारी के प्रभाव का आंकलन करने के उद्देश्य से 360 लघु उद्योगों इकाइयों के मालिकों से 17 मई (Unlock) तक हुए कुल नुकसान से संबंधित आंकड़े जुटाए गए। निष्कर्ष के तौर पर यह पाया गया कि COVID महामारी के कारण ऐसी कंपनिया जिनमे 8 से अधिक कर्मी कार्यरत हैं उनमें यह क्षति एक वर्ष की कुल बिक्री का औसतन 24% है। इसके अतिरिक्त जिन कंपनियो में लगभग 45 कर्मी कार्य रत हैं उन्हें एक वर्ष में कुल बिक्री की 10 फीसदी के करीब क्षति हुई है। [7]

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के विश्लेषण द्वारा यह कहा जा सकता है COVID-19 महामारी ने राष्ट्रीय आर्थिक विकास दर को बुरी तरह प्रभावित किया है। उत्पादन दर तथा उत्पादों की मांग में आयी भारी गिरावट ने बहुतेरी उद्योग इकाइयों के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है इसके अलावा देश में बढ़ती बेरोजगारी तथा सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योगों का संकुचन इस महामारी के सर्वाधिक प्रभावित केंद्र रहे हैं। Lockdown के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान हुआ है जिसकी पुष्टि सरकारी आंकड़ो तथा विभिन्न शोधों द्वारा की जा चुकी है। विश्व मुद्रा कोष द्वारा COVID-19 से प्रभावित भारतीय अर्थव्यवस्था के संबंध मे कहा भी गया है कि इसमे 4.5 फीसदी की भारी क्षति हुई है जो कि ऐतिहासिक क्षति है। हालांकि राष्ट्रीय बजट में MSMe के पुनरुत्थान हेतु विशेष स्तिमुलुस राहत पैकेज की घोषणा भी की गयी है जिसके दूरगामी परिणाम देखने को मिलेंगे।

संदर्भ सूची

1. Government of India. Department of MSMe. Gazette of India. https://msme.gov.in/sites/default/files/MSME_gazette_of_india_0.pdf
2. Two Hundred Twenty Ninth Report on Management of COVID-19 Pandemic and Related Issues. Presented To The Chairman, Rajya Sabha on 21st December, 2020.
3. डॉ. केशवा राय. स्टैंडिंग कमेटी की रिपोर्ट का सारांश, MSMe क्षेत्र पर COVID-19 का प्रभाव, 30 जुलाई 2021, PRS legislative.
4. Government of India, Ministry of Statistics and Programme Implementation, 2020.
5. Swayam Chayanika Rath, Priyanka Das. Impact of COVID-19 on MSMe in India, White paper, North Orissa Chamber of Commerce & Industry, 2020.
6. Ministry of Petroleum and Natural Gas report available at https://www.ppac.gov.in/
7. Rathore U, Khanna S. "COVID-19 crisis and health of small businesses: Findings from a primary survey", Ideas for India, 17 June, 2020.